बच्चों को अपने माता-पिता से क्या चाहिए...

अगर पेरेंट्स ने बचपन में बहुत बार ये सोचा होता है कि ये स्लो है, ये स्लो है, ये कुछ नहीं कर सकता है। ये तो गिरा ही देता है। इसके हाथ से तो चीज़ ही टूट जाती है। ये पढ़ने अभी बैठेगा लेकिन अभी वो उठ जायेगा। ये एकाग्रता से नहीं सकता है। ये लाइन उस बच्चे के लिए एक लेबल बन जाती है। हमारे ऊपर जो लेबल्स लगते हैं वो मैजोरिटी लेबल्स बचपन में लगते हैं। और वो भी हमारे पेरेंट्स हम पर लगाते हैं। और उन लेबल्स को हम अपनी आइडेंटिटी(पहचान) बना लेते हैं। हम तीस, चालीस, पचास साल के हो जाते हैं लेकिन हममें से कई अपने लेबल्स को बदलते ही नहीं हैं। क्योंकि हमें लगता है कि यही हम हैं। हमें किसने बताया कि यही हम हैं? हमारे पेरेंट्स ने।

मेरे पेरेंट्स ने कहा कि हम ऐसे हैं, तो हम ऐसे हैं। ये व्यक्तित्व बन जाता है बच्चे का। इसलिए पेरेंट्स की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है कि अपने बच्चे पर हमेशा पॉज़िटिव लेबल्स लगायें। वो पॉज़िटिव लेबल्स लगायें जो आप चाहते हैं कि वो बने। मान लीजिए, उदाहरण के लिए आपका बच्चा थोड़ा स्लो है, और थोड़ा स्लो भी किसके रेफ्रेन्स में आप देख रहे हैं? किसी और के रेफ्रेन्स में आप देख रहे हैं। लेकिन फिर भी समझो कि थोड़ा स्लो है, टाइम लगाता है अपनी हर चीज़ करने में, इधर से उधर कुछ करना है, बीच में रूक जाता है, बैठ जाता है। ओके है थोड़ा स्लो। लेकिन संकल्प से सिद्धि होती है। मतलब बार-बार अगर हम ये सोचेंगे, बोलेंगे, उसको बोलेंगे, उसके बारे में औरों को बोलेंगे, मतलब परिवार अगर आपस में डिसकस करेगा कि ये बड़ा स्लो है, इसका बड़े होकर क्या होगा? ये पढ़ाई कैसे करेगा? ये औरों के साथ कम्पीट कैसे करेगा? ये अगर हम सोचेंगे, आपस में बोलेंगे, करेंगे तो वो बच्चे का लेबल बन जायेगा। और वो बच्चा जीवन भर अपने लिए संकल्प करेगा। नहीं, मुझसे जल्दी नहीं होता, आई एम स्लो। वो लेबल उसने एक्सेप्ट कर लिया।

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

अब यही कि हम बच्चे पर क्या लेबल लगा सकते थे? हम बच्चे पर लेबल लगायें कि आप बहुत परफेक्ट हैं, आप हर चीज़ परफेक्टली कर सकते हैं, एक्यूरेट है आपका हर कर्म, आप देखो आपने कितनी जल्दी ये कर लिया, चाहे उसने स्लो ही किया हो। उसका कर्म स्लो है, हम उसको वायब्रेशन्स स्लो वाले नहीं देंगे। क्योंकि अगर वायब्रेशन्स में स्लो शब्द दे दिया तो वो वायब्रेशन्स को एब्ज़ॉर्ब करके उसका कर्म हमेशा स्लो रह जायेगा या और स्लो बन जायेगा। क्योंकि संकल्प से सिद्धि। वो जो दिख रहा है वो नहीं सोचना और बोलना। जो देखना चाहते हैं वो सोचना और बोलना है।

ये हमें स्पिरिचुअलिटी और मेडिटेशन सिखाती है। परमात्मा हमारी पालना कैसे करते हैं, वैसे ही हमें अपने बच्चों की पालना करनी है। परमात्मा हमें क्या कहते हैं तुम शान्त स्वरूप आत्मा हो। तुम प्रेम स्वरूप आत्मा हो। तुम पवित्र आत्मा हो। हम होते कहाँ हैं, लेकिन परमात्मा कहता है। हम पढ़ते हैं, सुनते हैं, पढ़ते हैं, सुनते हैं। मैं शान्त स्वरूप हूँ, मैं पवित्र हूँ, मैं शक्तिशाली हूँ। और धीरे-धीरे बनना शुरू हो जाते हैं। तो जैसा परमात्मा हमारी पालना करते हैं वैसे हमें अपने बच्चों की पालना करनी है। आप शक्तिशाली आत्मा हो, आप एक्यूरेट आत्मा हो, आप ईमानदार आत्मा हो, आप क्लीन हो, आप पंक्चुअल हो। ये नहीं बोलना कि तुम तो हर जगह लेट पहुंचते हो। तुम तो टाइम पर तैयार ही नहीं होते हो। संकल्प से सिद्धि हो जायेगी। पेरेंट्स के कहे हुए शब्द, पेरेंट्स की क्रियेट की गई सोच, बच्चे के संस्कारों पर बहुत डीप प्रभाव डालती है। और उससे बच्चे का भाग्य बनता है। अगर पेरेंट्स अपने संस्कारों की पालना कर ले तो बच्चों की पालना तो अपने आप उस वायब्रेशन में होने लग जाती है।

बच्चों पर लेबल हमेशा हाइएस्ट वायब्रेशन्ल फ्रिक्वेंसी का होना चाहिए। हमेशा प्युअर, पॉवरफुल, पॉज़िटिवली लेबल होना चाहिए। बच्चों को कभी कम्पटिशन का संस्कार नहीं डालिए। थोड़ा-सा डिफिकल्ट लग रहा होगा इस समय, क्योंकि बचपन से सीखते आए ना कि लाइफ इज़ द कम्पटिशन। लेकिन कम्पटिशन का संस्कार बच्चे को पूर्ण रीति से उभरने नहीं देता। लेकिन बच्चा हमेशा अपने आप को दूसरों की रेफ्रेंस में ही देखता है। लाइफ एक कम्पटिशन नहीं है। वो बच्चा जो आपके घर आया है वो अपने कर्म, संस्कार और भाग्य लेकर आया है। वो सिर्फ और सिर्फ अपनी रेफ्रेंस में आगे जा सकते हैं। लेकिन अगर हम दूसरों के साथ उनका कम्पटिशन करते हैं, या हम सिखाते हैं उनको कम्पटिशन, तो हम उनके अन्दर ईर्ष्या का संस्कार, सुपीरियर(श्रेष्ठ अनुभूति) फील करने का संस्कार, इनफीरियर(हीन भावना) फील करने का संस्कार, इगो का संस्कार, ये संस्कार हम उनको सिखाते हैं। क्योंकि हम कहते हैं कि आपको उनसे आगे जाना है। हमें उनके अन्दर ये संस्कार डालने हैं कि आप अच्छे तब हैं जब आप अच्छा अचीव करते हैं। लोगों से ज़्यादा अचीव करते हैं। ये नहीं हैं पेरेंटिंग। पेरेंटिंग अर्थात् आप बहुत प्युअर हैं, आप बहुत पॉवरफुल हैं। और अब आपको अपनी प्युरिटी को, अपनी पॉवर को, अपनी विशेषताओं को और आगे, और आगे बढ़ाना है। जितना सॉल को, आत्मा को स्ट्रॉन्ग बनायेंगे उतनी उनकी क्षमतायें बढ़ती जायेंगी।

कोटा-राज.। दीपावली के उपलक्ष्य में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ दादाबाड़ी सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सरस्वती बहन व ब्र.कु. सपना बहन।

कैलिफोर्निया-नोवाटो(यूएसए)। ब्रह्माकुमारीज़ के अनुभूति रिट्रीट सेंटर पर दीपावली का उत्सव बड़े हर्षोल्लास और अलौकिकता के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य आकर्षण हिंदू महाकाव्य रामायण के दो मुख्य पात्र राम सीता का राज्याभिषेक था, जो बुराई के सामने अच्छाई और प्रकाश के प्रतीक हैं। इस मौके पर अनुभूति रिट्रीट सेंटर की समन्वयक ब्र.कु. एलिजाबेथ, ब्र.कु. हेमा, कार्यक्रम संयोजिका ब्र.कु. वैशाली, नोवाटो के मेयर, नगर परिषद के सदस्य, प्रसिद्ध साइक्लिस्ट तथा कई सांस्कृतिक एवं धार्मिक नेताओं सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

राँची-हरमू रोड(झारखंड)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में दीपावली के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए हार्टफुलनेस संस्था की क्षेत्रीय समन्वयक सुनन्दा चौहान, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रियंका, समाजसेवी चन्द्राणी मुखर्जी, होमियोपैथी डॉ. रीना सेनगुप्ता, ब्र.कु. निर्मला बहन, राय यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार डॉ. पीयूष रंजन, आर्ट ऑफ लिविंग के सुनील गुप्ता, समाजसेवी अनूप चौहान तथा ब्र.कु. प्रदीप भाई।

दिल्ली। अशोक विहार फेज़ 2 के रामलीला मैदान में रामलीला समिति के सदस्यों द्वारा नवरात्रि पर आयोजित नौ दिवसीय रामलीला कार्यक्रम में सत्कार भवन,अशोक विहार फेज़ 2 की ब्रह्माकुमारी बहनों को आमंत्रित किया गया। इस मौके पर कार्यक्रम को सम्बोधित करने के पश्चात् भाजपा दिल्ली प्रदेश के कोषाध्यक्ष सतीश गर्ग को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन।

आवश्यकता

निम्नलिखित पदों पर ग्लोबल अस्पताल मा.आबू एवं आबू रोड में सेवा(Job) हेतु डॉक्टर्स तथा भाई-बहनों की आवश्यकता है -

1. एनेस्थेटिस्ट/Anaesthetist -MD/DNB(Anaesthesia)
2. रेजिडेंट मेडिकल ऑफिसर - MBBS/BAMS

उचित वेतन सुविधा, संपर्क करें - 9414374589(सुबह 9 बजे से 5 बजे के बीच)

ई-मेल - ghrchrd@ymail.com

गया-सिविल लाइन(बिहार)। दीपावली के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में चैतन्य देव-देवी की झाँकी में उपस्थित हैं ब्र.कु. शीला बहन, व्यवसायी प्रदीप जैन तथा ज्ञान दीप पब्लिक स्कूल के डायरेक्टर धर्म साही।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan,Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹- 720, आजीवन - ₹- 6000
Website: www.omshantimedia.org